प्रिय - छात्रों वर्तमान दौर में अपने आप को स्वस्थ्य रखे खुशहाल रखते हुए दूसरों को भी ऐसा रहने के लिए जागरूक करें । कुछ छात्र अध्यापकों का सुझाव था कि III यूनिट को समझा दे सर जिसके परिप्रेक्ष्य में आपको यह सामग्री प्रेषित की जा रही है। जो और आवश्यकता हो उसको भी आगे प्रेषित करते रहेंगे। घर पर रहें सरकार के बताये नियमों का पालन करें हिट एण्ड फिट रहें।

Scanned by CamScanner

SANT LAL RAVAT - Astt. Prof. - Deptt of Education

P.C. 4 - Course code - F-503

unit - III

Biodiversity - जैव विविधता -

" जैविक विविधता से आशय उस परिवर्तन से है जो आबादी, प्रजातियों, समुदाय और पारिस्थितिक तन्त्र में मिलता है।"

" Biodiversity is a term referring to the variation found among populations, species, communities and ecosystem."

एक युग था जब पृथ्वी पर की कृषि व्यवस्था तथा इसपर उत्पन्न होने वाले खाद्य पदार्थों की मात्रा अथाह थी। परन्तु आज उस स्थिति में बदलाव हो गया अब वह केवल पर्याप्त (enough) की श्रेणी में आ गयी है। संतोष इस बात का है कि यह सामग्री पुनः प्राप्त की जा सकती है अतः यदि बहुत बुद्धिमता से उत्पादन का प्रबन्धन हो तो पूरे विश्व में रहने वाले जीव वर्ग को उसके खाने-पीने और अन्य पदार्थों की पूर्ति की जा सकेगी। पर इसके लिए प्राकृतिक विविधता का उपयोग करना होगा, जिसे आज हम जैविक विविधता के नाम से नामित करते हैं।

धीरे-धीरे यह जाना जाने लगा कि यह विविधता सभी सजीव पदार्थों व वस्तुएं (Biotic substance) में है और प्रगति के लिए इसका उपयोग सम्भव है। तभी से जैविक विविधता की उपयोगिता को प्रयोग में लाया जाने लगा।

जैविक विविधता को 3 स्तरों में देखे

1- प्रथम पारिस्थितिक तन्त्र के स्तर पर — A - पहाड़ी पारिस्थितिक तन्त्र
B - मैदानी "
C - रेगिस्तान "
d - तटीय "

Scanned by CamScanner

② द्वितीय प्रजातियों के स्तरपर = विशेषज्ञों ने विश्व में विभिन्न स्तर पर प्रजातियों का अंकन 15 लाख से 800 लाख तक किया है

③ तृतीय प्रजातियों के अन्त निहित स्तरपर = हर प्रजाति के अन्दर ही असंख्य प्रकार की विविधता एवं विभिन्नता सम्भव है।

जैव विविधता की विशेषताएं :→ निम्नलिखित है।

1— इसमें अनेक परिस्थितिक तंत्र सम्मिलित होते है।
2- इसमें जैविक विषमता एवं अनेक पर्यावरणों का बोध होता है।
3. " जीवों की आकृतिया, शारीरिक रचना तथा आनुवांशिक पक्षों को महत्व दिया जाता है।
4- प्रत्येक जीवधारी की अपनी प्रजातियाँ होती है।
5— इसके लिए परिस्थितिक तन्त्र उत्तरदायी होता है।
6- प्रत्येक प्रकार के जीवधारी की अपनी परिसीमा होती है।

जैव-विविधता में भारत की स्थिति :

भारत विश्व के उन 12 देशों में सम्मिलित है जहाँ वृहद "जैव विविधता" है।
अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता कन्वेंशन 1994 —

A — जैव विविधता का संरक्षण
B — जैव विविधता के घटकों का निरन्तर उपयोग
C— संसाधनो की उपयोगिता से उत्पन्न फायदों को बराबर-2 बाँटना

एक अनुमान के अनुसार भारत में = 48 हजार पौधों की प्रजातियाँ
= 81 हजार जीवधारियों की प्रजातियाँ
जोकि विश्व की जीवधारियों का 6.4% है।

Scanned by CamScanner

आवृत बीजी पादपों - 17500 जातियां
अनावृत बीजी पादपों - 64 जातियां
पणोद्भिद - 1022 "
हरितोद्भिद - 2843 "
शैवालों - 1990 "
कवकों - 13000 "

प्राणी जगत - कीड़ों = 57000 प्रजातियां
मछलियों = 2546 - जातियाँ
मोलस्का = 5000 "
उभय-चर = 204 "
सरीसृप = 420 "
पक्षियों = 12281 "
स्तनधारी = 372 "
पशुओं में → भेड़ों - 40 प्रजातियां
बकरियों - 20 "
ऊंटों - 08 "
घोड़ो - 06 "
गधों - 02 "
मुर्गियों - 18 "

वन्य जीव संरक्षण → wild Life Conservation

वन्य जीवों के संरक्षण हेतु अधिनियम - 1972
प्रथम संशोधन - 1986
द्वितीय संशोधन 1991

वन्य जीवों की समुचित सुरक्षा एवं संरक्षण हेतु राष्ट्रीय उद्यान = 84
वन अभ्यारण्य = 447

वन जीव कोष - बनाया गया है।

उपाय :- (1) वाह्य खतरा, प्रदूषण, कोरोना वायरस, आदि से बचाना।
(2) वन क्षेत्र पर सीमित, जनसंख्या, अवैध शिकार, कमी वाले जीवों का विशेष संरक्षण, ध्यान, देखरेख, मिश्रित वस्ता, कार्यक्रम, कानूनी प्रावधान जागरूकता फैलाकर इत्यादि।

Scanned by CamScanner

वन्य जीव संरक्षण से सम्बन्धित परियोजनाएं :-

1- बाघ परियोजना Tiger project :- (1973)

2- हाथी Elephant Project :- (1992)

3- गिर शेर संरक्षण (1972)

4- कछुआ संरक्षण

5- कस्तूरी मृग 6- लाल पाण्डा 7- हागुंल 8- थामिन 9- गैंडा

10- घड़ियाल

Conservation Biodiversity :-

सम्पूर्ण विश्व की जैविक विषमता अधिक दबाव में है। संरक्षण व योजनाएं

1- IBPGR (अन्तर्राष्ट्रीय आनुवंशिक पौधों के स्रोत बोर्ड

2- IUCN (विश्व संरक्षण संगठन)

3- WRL (विश्व स्रोत संस्थान)

4- यूनस्को का मानव एवं जीवमण्डल कार्यक्रम

5- WCMC - (विश्व संरक्षण परिवीक्षण केन्द्र)

6- UNEd -

इस यूनिट में सभी जीव जन्तुओं, वनस्पतियों व प्राकृतिक संसाधनों के बचाव, उपाय, पृथ्वी को सुरक्षित रखने तथा जीव समुदाय में मानव जीवन को बचाने हेतु सभी को इनका बचाव करना होगा, वृक्षारोपण पेड़ों का कटाव, अवैध शिकार, किसी भी जीव की बिना हक हत्या आदि बचाकर मानव जाति के जीवन को बचाया जा सकता है।

Next = अब यूनिट 5

Scanned by CamScanner